AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

आदिवासी अस्मिता बोध : अवधारणा और स्वरूप

ORIGINAL ARTICLE

Author
तुलसीराम वी
शोधार्थी, हिंदी विभाग
हैदराबाद विश्वविद्यालय,
तेलंगाना, भारत

शोध सार

अस्मिता मूलक विमर्शों में आदिवासी विमर्श को आज समझने की आवश्यकता है। इस लेख मे आदिवासी जीवन की अवधारणा और स्वरूप पर प्रकाश डाला गया है। उनके समाज की समस्याओं एवं चुनौतियों को समझने का प्रयास किया गया है। इस आधुनिकता के दौर में जल, जंगल, जमीन का संघर्ष उनके जीवन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस लेख मे जल,जंगल,जमीन और आधुनिकता के विरोधाभास को देखा जा सकता है, साथ ही उनकी संस्कृति एवं जीवन शैली को भी समझने का प्रयास करेंगे।

मुख्य शब्द

आदिवासी, अस्मिता, अवधारणा, आधुनिकता, भूमंडलीकरण.

प्रस्तावना

'अनेकता में एकता' भारतीय समाज की महत्वपूर्ण विशेषता है। यह वाक्यांश इस बात का भी सूचक है कि भारतीय समाज में विभिन्न जनजातियों का पाया जाना हमारी सांस्कृतिक धरोहर है, इन जनजातियों में आदिवासी समाज एक है। आदिवासी समाज अपनी अस्मिता, अपनी पहचान, अपने प्राकृतिक जीवन मूल्यों के कारण जाना जाता है, ये आदिवासी जनजाति जंगलों में निवास करती है। जंगल ही इनका जीवन है तथा आधुनिकता की पहुँच से कोसो दूर है। भारत के इतिहास में आदिवासियों की अपनी एक परंपरा रही है। अपनी संस्कृति, खान–पान, रहन–सहन, बोली, भाषा इन सब कुछ के कारण आदिवासी समाज अपनी एक पहचान रखता है। लेकिन आज आदिवासियों की स्थिति सोचनीय है।

हिन्दी में पिछले दो–तीन दशकों से अस्मितावादी लेखन पर चर्चा हो रह है। इसी अस्मितावादी आंदोलन में स्त्री, दलित, आदिवासी, विकलांगता एवं किन्नर आदि उत्पीड़ित अस्मिताओं ने साहित्य में बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया है। आदिवासी विमर्श ने इस आंदोलन में साहित्य को एक नई धारा और नई दिशा प्रदान की। आदिवासी साहित्य आने से पहले बाहरी दुनिया में आदिवासियों के बारे में बहुत कम या भ्रामक जानकारी थी। आदिवासी लेखन ने समाज साहित्यिक दुनिया को एक नई दृष्टि दी। इस लेख में आदिवासी अस्मिता बोध : अवधारणा और उनके स्वरूप को समझने का प्रयास किया जाएगा आदिवासी जन जातियाँ विश्व के हर एक भाग, हर एक देश में निवास करती रही है। आदिवासियों का समाज वह समाज है जो वनों में निवास करने वाला कृषकों का समाज है। आज के भूमण्डलीकरण के दौर में आदिवासी समुदाय सबसे विकट स्थिति से गुजर रहा है, आदिवासी समाज अपनी अस्मिता

या पहचान को कायम रखने के लिये जल, जंगल, जमीन की लड़ाई लड़ रहा है। साथ ही साथ आदिवासी समाज अपनी जीवन शैली, परंपरा, रीति–रिवाज, भाषा, संस्कृति और अपनी न्याय प्रणाली को भी कायम रखने की कोशिश कर रहा है।

आदिवासी शब्द और परिभाषा

आदिवासी अस्मिता का विश्लेषण करने से पहले आदिवासी शब्द की व्याख्या के साथ–साथ परिभाषा, एवं आदिवासी जनसमुदायों की पहचान करना अनिवार्य है। "आदिवासी शब्द 'आदि' और 'वासी' इन दो शब्दों से मिलकर बना है आदि अर्थात् प्रथम या सबसे पहले से हैं और निवास यानी निवासी या निवास करने वाला से हैं।"[1] आदिवासी अर्थात् सबसे पहले निवास करने वाला या किसी देश का मूल निवासी से है। "आदिवासी (A Resident of Dweller of a place) अर्थात् किसी स्थान का निवासी।"[2]

आदिवासी परिभाषा को विद्वानों ने अपने–अपने ढंग से समझाने का प्रयास किया है। गंगा सहाय मीना आदिवासी की परिभाषा देते हुए लिखते हैं कि "आदिवासी देश के मूल निवासी माने जाने वाले तमाम आदिम समुदायों का सामूहिक नाम है। इस संदर्भ में यह विचारणीय है कि आदिवासी पद का 'आदि' उन समुदायों के आदिम युग तक के इतिहास का द्योतक है।"[3]

आदिवासी लेखक माया बोरसे के अनुसार "आदिवासी समाज एक ऐसा समाज है जिसके नाम में ही उसकी पहचान छुपी हुई है। आदिवासी के लिए 'मूल निवासी शब्द का भी प्रयोग किया जाता है, अर्थात् आदिवासी समाज इस भूमि का मूल निवासी है और वही इस भूमि का उत्तराधिकारी भी है।"[4] आदिवासी लेखक माया बोडसे ने आदिवासियों को भारत का मूल निवासी माना है।

डॉ. विनायक तुमराम के अनुसार "एक विशेष पर्यावरण में रहने वाला, एक–सी बोली बोलने वाला समान जीवन शैली से सजा, एक से देवी–देवताओं को मनाने वाला, समान सांसंकृतिक जीवन –यापन करने वाला परंतु अक्षर ज्ञान रहित मानव समूह यानी आदिवासी है। इन्होंने आदिवासियों की परिभाषा अलग ढंग से दी है।"[5]

गिलिन और हिलिन ने अपनी रचना 'कल्चरल ऐथ्रोपोलॉजी' में जनजाति की परिभाषा देते हुए लिखा है–" स्थानीय जनजाति समूह को ऐसा समवाय जनजाति कहा जाता है जो एक सामान्य क्षेत्र में निवास करता है। एक सामान्य भाषा का प्रयोग करता है तथा किसी सामान्य संस्कृति में रहता है।"[6] इन्होंने आदिवासी शब्द की अलग परिभाषा देने का प्रयास किया।

इंपीरियल गजेटियर के अनुसार– "एक आदिम जाति परिवारों का एक समूह है, जिसका एक सामान्य नाम है, जिसके सदस्य एक सामान्य भाषा बोलते हैं तथा एक सामान्य क्षेत्र में या तो वास्तव में रहते है या अपने को उसी क्षेत्र से संबंधित मानते है तथा ये समूह अंतर्विवाही होते है।"[7] इनके अनुसार एक जैसी पहचान रखने वाले व्यक्ति या समूह आदिवासी कहलाते है।

क्रोबर के अनुसार– "आदिम जानजातियां ऐसे लोगों का एक समूह होता है, जिनकी अपनी एक सामान्य संस्कृति होती है।"[8] इन्होंने आदिवासी शब्द की परिभाषा सामान्य रूप से देने का प्रयास किया है।

रत्नाकर भंगड़ा और स. आर. बिजोय के अनुसार– "मजबूत के मौखिक से शाब्दिक अर्थ से ज्ञान होता है आदि निवासी यानी किसी स्थान पर निवास करने वाला या प्रथम निवासी मनाता है।"[9]

सामान्य रूप से आदिवासी उसे कहते हैं जो जंगलों में रहते हुए अपना जीवन यापन करते हैं। अपनी भाषा का प्रयोग करते हैं, अपना सामाजिक सांस्कृतिक जीवन जीते है तथा जल जंगल जमीन से जुड़े हुए होते हैं।

आदिवासी अस्मिता

भारत में आदिवासियों का इतिहास संघर्षों का इतिहास रहा है। पहले आदिवासियों को सभ्यता से बहिष्कृत कर जंगलों में धकेल दिया गया। उन जंगलों में अपना घर बसाने के बाद भूमण्डलीकरण के नाम पर फिर वहाँ से

कही और जगह धकेल दिया जाता है। इन जन समुदायों ने जंगलों में रहते हुए अपनी पहचान, संप्रदाय और अपने संस्कृति की विरासत कायम रखी और पूरे आत्मसम्मान के साथ जीते रहे। इस संदर्भ में रमाणिका गुप्ता अपने लेख में लिखती है, "एक परजाति समूह होते हुए भी आदिवासियों ने अपनी संस्कृति, भाषा, जीने की सामूहिक शैली, परंपराओं और रीति–रिवाजों की विरासत को जिंदा रखा है।"[10] जब–जब भूमण्डलीकरण के नाम पर आदिवासियों की संस्कृति, संप्रदाय, रीति–रिवाज, परंपरा व अस्मिता को नष्ट करने का प्रयास किया गया है, तब–तब इन्होंने अपनी संस्कृति, संप्रदाय के लिए अपनी आवाज़ उठाई है।

आदिवासी अस्मिता की बात की जाएगी तो अस्मिता से जुड़े सभी प्रकार के तत्वों की पहचान करनी होगी। आदिवासी अस्मिता के तत्वों के विषय में प्रसिद्ध आदिवासी लेखक हरिराम मीणा ने अपनी पुस्तक आदिवासी दुनिया में लिखा है कि, "आदिवासी अस्मिता में उनकी समग्र संस्कृति को रखना होगा जिसने भाषा, धर्म, मिथक, प्रथाएँ, जीवन शैली, खान पान, वेश भूषा, गणचिन्ह, सौंदर्य बोध, आवास, परम्परागत ज्ञान, मानवेत्तर प्रणाली जगत व प्रकृति तत्वों से संबंध, स्वायत्तता, जीवन–यापन, पूर्वोत्सव, किवदंतियाँ, मुहावरे, गल्प, गीत संगीत, स्त्री–पुरुष संबंध, परिवार समाज व बस्तियों की दशा आदि से संबंधित सभी बातें समाहित होंगी।"[11]

अस्मिता व्यक्ति को 'मैं कौन हूँ?' 'मेरी जड़े कहाँ है?' एवं 'अपने समाज से मेरा संबंध कैसा है?' जैसे सवालों पर सोचने के लिए मजबूर कर देती है। अस्मिता व्यक्ति की सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक स्थितियों को व्याख्यायित करती है। भाषा समाज में अपनी पहचान को बनाए रखने का प्रयास करती है। आदिवासी अस्मिताओं के परिवर्तनशील अवधारणा के विषय में भाषा पर बात करते हुए आदिवासी कवि हरिराम मीणा ने अपनी पुस्तक आदिवासी दुनिया में लिखते हैं, "किसी भाषा पर बात की जाय तो भाषा की मौलिकता के संरक्षण के साथ–साथ उनके विकास व उपयोग के लिए बाहरी सटीक व उपर्युक्त शब्दों का समावेश, मूल लिपि नहीं है तो किसी लिपि को अपनाना या स्वतंत्र लिपि विकसित करना भाषा में रचे जाने वाले साहित्य या मौखिक साहित्य के संरक्षण के लिए वैज्ञानिक तकनीकी का सहारा लेना भाषा के लिए उपयोगी होगा। इससे वह भाषा दूषित ना होकर समृद्ध ही होगी।"[12]

आदिवासी समाज वनवासी अवश्य रहा है, किंतु गैर आदिवासी समाज जैसा कभी नहीं रहा। विदेशी आक्रमणकारियों से लेकर आज के उपनिवेशवादियों तक आदिवासियों के इलाके में घुस कर इनके अस्मिता को चोट पहुँचाते रहे हैं। यदि इन आदिवासियों के पास अपना जल, जंगल, जमीन नहीं रहती तो इनकी अपनी पहचान भी कभी नहीं रहती। अति सभ्य समाज और आदिवासियों के मध्य भौतिक, सांस्कृतिक एवं वैचारिक स्तर पर कई–कई युगों का अंतराल जो दिखाई देता है। हरिराम मीणा के शब्दों में, "इस अंतराल से परे आदिम समाजों की अस्मिता के सवालों को जब इस उत्तर आधुनिक एवं वैश्विक दौर में समझने का प्रयास किया जाएगा तो एक छोर पर आदिम समाज है जिन्हें आदिवासी के नाम से जानते हैं, ये लोग कभी भी जीवन के प्रति आदिम दृष्टिकोण अपनाये हुए हैं। दूसरी और मुख्य राष्ट्र समाज का विकसित एवं उच्च तकनीकी से संपन्न वह वर्ग सामने आता है जो राष्ट्र समाजों की सीमाओं को भी तोड़ता हुआ वैश्विक अग्रणी वर्ग का प्रतिपादन करता है।"[13]

अवधारणा एवं स्वरूप

आदिवासी अस्मिता के परिप्रेक्ष्य में आदिवासी की अवधारणा पर हमें कायदे से आलोचनात्मक ढंग से विचार करना चाहिए। एक अति सभ्य समाज आदिवासी मानव को जंगली, वनवासी, असभ्य, बर्बर, गिरिजन, लंगोटिया आदि नामों से संबोधित कर उन्हें समझ लेना कितना सार्थक है इस बात पर भी विचार करनी चाहिए। इल्विन महोदय ने आदिवासी को परिभाषित करते हुए लिखा है कि–"आदिवासी वह है जो सबसे शुद्ध हो, वह ऐसा ग्रुप है जो मैदानी इलाकों में रहने वालों के संपर्क में हो और आदिवासी जीवनशैली में रहता हो।"[14]

आदिवासी समाज अपनी पहचान बनाए रखने के लिए जल, जंगल, जमीन होने को आवश्यक समझता है। इन्हीं कारणों से आदिवासी समाज वनों में निवास करने वाला कृषकों का समाज कहलाता हैं। आदिवासियों को सहज ही असभ्य समझ लिया जाता हैं, उसकी सभ्यता और संस्कृति को ना तो समझने की कोशिश की जाती है और ना ही उनके साथ सहृदय भाव के साथ व्यवहार किया जाता है। बाहरी स्वरूप और आवरण के आधार पर

परिभाषा गढ़ दी जाती है, जो यथार्थ से बिल्कुल मेल नहीं खाती है। "आदिवासी लोग ऐतिहासिक रूप से विकसित और जैविक रूप से स्वतः आगे बढ़ने वाली ईकाईयां हैं, जो कुछ खास सांस्कृतिक विशेषताओं द्वारा लक्षित होती है और जो मुख्यधारा के समाज और उसकी संस्थाओं द्वारा कई तरह से दबाई जाती है, और जो लंबे समय से अपनी विशिष्टताओं और अस्तित्व के लिए बुनियादी सीमाई संसाधनों के संरक्षण व उनकी बढ़ोतरी के संघर्ष में लगे रहे हैं। इस मायने में वे कारगरता और चरित्र, दोनों ही अर्थों में देशज लोगों के समान हैं, इसलिए अगर हम आज देशज और आदिवासी पदों का पर्याय के रूप में प्रयोग करें तो कोई खास मुश्किल नजर नहीं आती। हां दोनों पदों के इस्तेमाल का ऐतिहासिक संदर्भ हमेशा याद रखना होगा। हमें याद रखना होगा कि आदिवासी भारतीय भूमि पर निवास कर रहे देश के मूल निवासियों या आदि निवासियों के वंशजों के रूप में मान्य तमाम लोगों समुदायों के लिए इस्तेमाल होने वाला एक व्यापक पद है।"[15]

आदिवासी समुदाय सबसे विकट परिस्थितियों से गुजरते हुए भी अपनी पहचान के लिए जंगलों को साफ़ करके जिस जमीन को वे खेती करने लायक बनाते है, उससे उनका आत्मीय रिश्ता होता है, इसलिए वे जमीन उनके लिए उनकी संस्कृति व पहचान का हिस्सा बन जाती है। "आदिवासियों की अस्मिता का प्रश्न जहां उनके नाम की परिभाषा से गहरा संबंध रखता है, वहीं उनकी सामाजिक संरचना और जीवन–यापन के साधन जल, जंगल ज़मीन से जुड़ जाता है। उसका उद्‌गम उसकी पहचान को पुख्ता करता है तो उसकी विरासत, भाषा, शिक्षा, संस्कृति और जीवन शैली पहचान को ज़िंदा रखती है। इनकी रक्षा किए बिना उसकी अस्मिता की रक्षा नहीं हो सकती है।"[16]

निष्कर्ष

आदिवासियों की अस्मिता का प्रश्न जल जंगल ज़मीन और उनके प्राकृतिक संसाधनों के अधिकारों से जुड़ा है। आज भूमण्डलीकरण के नाम पर इस समुदाय पर सबसे बड़ा खतरा अपनी अस्मिता के गायब होने का है। आदिवासियों की अस्तित्व व अस्मिता को कायम रखने के लिए उनकी भाषा, संस्कृति, परंपरा, रीति–रिवाज, सामूहिक जीवन शैली आदि में बाधा डाले बिना उनकी उन्नति के लिए काम करना जरूरी है। भूमण्डलीकरण के नाम पर उन आदिवासियों को बेघर, बेदखल किया जा रहा है, उनके घरों से उन्हें बाहर कर दिया जा रहा है। अपनी पहचान जल, जंगल, ज़मीन से दूर किया जा रहा है, वे अपनी पहचान को खो कर जीवन–यापन के लिए शहरों में आकर बस रहे हैं।

संदर्भ सूची

1. प्रसाद कालिका, *वृहत हिन्दी कोश,* वाराणसी ज्ञानमंडल लिमिटेड, पृ 125।
2. Pathak, R. C., Standard Illustrated dictionary of the Hindi language. पृ– 38।
3. मीणा गंगा सहाय, *आदिवासी साहित्य विमर्श,* अनामिका पब्लशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, पृ– 19।
4. गुप्ता रमणिका, *आदिवासी कौन,* राधाकृष्ण, पृ– 27।
5. गुप्ता रमणिका, *आदिवासी कौन,* राधाकृष्ण, पृ– 27।
6. उप्रेती हरिश्चंद्र, *भारतीय जनजातियाँ संरचना एवं विकास,* राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, पृ.सं 1।
7. सोनी एस. के., *राजस्थान के आदिवासी,* यूनिक ट्रेडर्स, पृ. 8।
8. सोनी एस. के., *राजस्थान के आदिवासी,* यूनिक ट्रेडर्स, पृ. 9।
9. गुप्ता रमणिका, *आदिवासी कौन,* राधाकृष्ण, पृ 27।
10. गुप्ता रमणिका, *आदिवासी अस्मिता के प्रश्न;* हाशिये का वृत्तांत, सं. दीपक कुमार, देवेंद्र चौबे, पृ– 353।
11. मीणा हरीराम, *आदिवासी दुनिया,* राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत पृ. 170।

12. मीणा हरीराम, *आदिवासी दुनिया,* राष्ट्रीय पुस्तक न्याय भारत, पृ. 172।
13. मीणा हरीराम, *आदिवासी दुनिया,* नेशनल बुक ट्रस्ट 2013, पृ 168।
14. चतुर्वेदी जगदीश्वर, *नया जमाना–आदिवासी अवधारणा की तलाश में,* पृ.2।
15. मीणा गंगा सहाय, आदिवासी साहित्य विमर्श, पृ 25।
16. गुप्ता रमणिका, *आदिवासी अस्मिता के प्रश्न,* पृ– 351।

––==00==––